भूमिका

उत्तर प्रदेश की पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं की समृद्धि और उनकी गहनता में उसके लोकमानस की स्पष्ट छवियाँ है। इन लोकनाटकों और शैलियो से न केवल उसकी सांस्कृतिक पहचान बनती है, बल्कि उसमें यंहा के क्षेत्रीय व आंचलिक कला सौन्दर्य का परिचय भी मिलता है।

रामलीला उत्तर प्रदेश का बहुचर्चित और प्रमुख लोक नाट्य है। जिसके प्रति जनमानस की आस्था देखते ही बनती है। भारत के प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण पर आधारित यह लोक नाट्य समाज में एक आदर्श प्रस्तुत करता है। प्राचीन समय में रामलीला का जो स्वरुप था, समय परिवर्तन के साथ-साथ उसमें परिवर्तन आया है। कहा जाता है की परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परन्तु यह बात सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि वह परिवर्तन सकारात्मक है, या नकारात्मक। समय के साथ साथ रामलीला में भी परिवर्तन आये। वो परिवर्तन जैसे भी रहे हो,परन्तु रामलीला के प्रति लोगो की आस्था आज भी सराहनीय है। रासलीला की अपेक्षा रामलीला को अधिक व्यापकता मिली है। अवध क्षेत्र के अतिरिक्त पूरे हिंदी क्षेत्र में इसके विभिन्न रूप आज भी प्रचलित हैं। उत्तराँचल में संगीत पर आधारित पद्मय रामलीला का प्रचलन रहा है। तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पंडित राधेश्याम कथा वाचक ने राधेश्याम रामायण का सूत्रपात किया उनकी शैली में उनके समकालीन पारसी रंगमंच का बहुत प्रभाव है। रामलीलाओं में बाल्मीकि तथा तुलसीदास की रामायण के विविध प्रसंगों को आंचलिक तथा उपलब्ध रीति के अनुसार खेला जाता रहा है। अपनी विशिष्टता के कारण वाराणसी तथा रामनगर की रामलीलाओं का अलग महत्व है। अमरीकी नाटककार रिचर्ड शेकनर के पर्यावरणीय रंगमंच के समानांतर इन रामलीलाओं में न केवल प्रदर्शन मंच बदल जाते हैं बल्कि स्थान और दर्शक भी विभिन्नता लिए होते हैं।भारत की लोकधर्मी नाट्य परम्परा में लीला नाटको का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें रामलीला और रासलीला विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रामलीला में राम के लोकरक्षक स्वरुप को प्रगट करने की एक

सुदीर्घ परम्परा है। राम के अवतारी रूप की मंच प्रस्तुति अपने देश के साथ थाईलैंड ,वर्मा,सिंगापुर ,जावा सुमात्रा आदि एशियाई देशो में भी लोकप्रिय है।

रामलीला का जो वर्तमान स्वरुप लोक जीवन में प्रचलित है उसका प्रवर्तन गोस्वामी तुलसीदास ने किया। तुलसीदास ने संवत 1631 में रामचरित मानस की रचना की। उन्होंने रामलीला मंडलियाँ स्थापित की और रामकथा का मंचन करवाया। रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में कागभुशुण्डी का कथन इस बात का प्रमाण है। काशी में चित्रकूट की रामलीला का शुभारम्भ गोस्वामी तुलसीदास ने करवाया था। मेघा भगत के नेतृत्व में ये लोक मंच सशक्त बना। रामलीला का प्रदर्शन गाँव गाँव और नगर नगर में होने लगा। निरक्षर जनता तक रामकथा पंहुची। रामजीवन के विविध प्रसंगों की रंग प्रस्तुति ने जनजीवन को सबल आधार दिया। समाज में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मर्यादाओं और आध्यात्मिक आदर्शो की स्थापना की।

जिस दृष्टि से भी देखा जाये,राम एक आदर्श नर नेता, पूर्ण पुरुष ही प्रतीत होते है। अपनी विशेषताओं के कारण राम आज जगत मे सर्वपूज्य तथा सर्व प्रिय है। रामलीला शब्द के साथ ही हमारे सामने कई चित्र उभर आते है। खुले मैदान या देव स्थान पर बना साधारण मंच। धनुष बाण लिए श्याम वर्ण के राम , गौर वर्ण के लक्ष्मण, भारतीय नारी गौरव की प्रतीक सीता,जटाधारी विश्वामित्र,विकराल मूर्ति रावण, और सेवा भावना के साकार रूप हनुमान। राम जन्म, ताड़का वध, सीता स्वयंवर, वन गमन, भरत मिलाप, सीता हरण, लंका दहन, विजयी राम का अयोध्या आगमन, राजतिलक जैसे अनेक द्रश्य हमारे आँखों के सामने उपस्थित हो जाते है। भारतीय लोकनाट्यों की विभिन्न शैलियों में समय समय पर परिवर्तन आया। विकृतिया भी आई, पर रामलीला मंच इससे अछुता रहा। इसका कारण है राम का मर्यादा पुरुषोत्तम होना।

मै उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले का रहने वाला हूँ ,जंहा की रामलीला मंडलियाँ दिल्ली ,मुंबई ,अम्बाला ,हरियाणा,जयपुर देहरादून आदि क्षेत्रों में रामलीला का मंचन करती हैं, जिसमें वर्तमान समय के अनुसार अनेक प्रयोग भी किये जाते हैं। और दूसरी और रामनगर की रामलीला है ,जो आज भी प्राचीन परम्परा को निभाते हुए जनमानस के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

उत्तर प्रदेश के लोक नाट्य रामलीला से जुड़कर मैंने इसमें शोध की आवश्यकता को महसूस किया। रामलीला की विभिन्न मंडलियो द्वारा रामलीला के प्रस्तुतीकरण ने किस प्रकार जन मानस को प्रभावित किया है ? लोक कला को प्रसारित करने वाले कलाकार किस प्रकार इस कला को जीवित रखे हुए है ? कैसा है उनका जीवन ? आज जब लोक कलाए गुम होती जा रही है। तब कैसे इस लोक नाट्य रामलीला को बचाया जा सकता है। इन सभी बिन्दुओं ने मुझे उत्तर प्रदेश लोकनाट्य रामलीला विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किया । मेरे इस शोध का उद्देश्य रामनगर और मुरादाबाद की रामलीला मंडलियो की प्रस्तुतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर उसकी विसंगतियों और महत्व को उजागर करना है । जिससे समाज पर उसके प्रभाव का पता लगाया जा सके और भारतीय लोक नाट्यो को संरक्षित करने की दिशा में प्रयास किया जा सके। आज वर्तमान समय में जिस प्रकार टेलीविजन और सिनेमा ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर अपने वश में किया है। ऐसे में भारतीय लोक नाट्य जो भारतीय संस्कृति की एक पहचान है, अमूल धरोहर है। उसको कैसे जीवित रखा जा सकता है। और उसे मनोरंजन का सशक्त माध्यम बनाकर लोक नाट्य कलाकारों को कैसे स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है।

गत 17 वर्षो में रामलीला से जुड़ कर मैंने उसमें बहुत सी चीजों को महसूस किया ।रामलीला में हो रहे परिवर्तन और उसके प्रति लोगो का द्रष्टिकोण क्या है। शोध के माध्यम से इन सब प्रश्नों के उत्तर को खोजकर जन मानस के समक्ष रखना ही मेरे शोध का उद्देश्य है। जनमानस की अटूट आस्था पर आधारित इस रामलीला लोकनाट्य का वर्तमान स्वरुप कितना सार्थक है ,और उसमें हो रहे परिवर्तन और

प्रयोगों का समाज पर क्या प्रभाव पढ़ रहा है। इन सब बातों ने मुझे उत्तर प्रदेश लोकनाट्य रामलीला का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। चूँकि मैंने गत 17 वर्षो से भारत के विभिन्न क्षेत्रो में रामलीला का मंचन मुरादाबाद की विभिन्न रामलीला मंडलियों के साथ मिलकर किया है। और वर्तमान में भी भारत की राजधानी दिल्ली के प्रतिष्ठित मंच श्री धार्मिक लीला कमेटी ,परेड ग्राउंड ,सुभाष मैदान ,लाल किला, दिल्ली में एक सह निर्देशक के रूप में रामलीला मंचन कर रहा हूँ।